विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

आचार पद्धति सम्बन्धी सामान्य सूचनाएँ

विद्या भारती से सम्बन्धित प्रान्तीय समितियों तथा विद्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों तथा दैनिक क्रियाकलापों में एकरूपता रहे, इस हेतु आवश्यक सूचनाएँ –

1. **वन्दना में चित्रों का क्रम** : (बायें से दायें की ओर)

   1. (सरस्वती माता) 2. (ॐ) 3. (भारतमाता)

   विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र द्वारा प्रकाशित तीनों चित्रों को ही उपयोग में लायें।

2. **दीप प्रज्ज्वलन, दीपस्तुति, पुष्पार्चन –**

   - दीप मंत्र के समय अग्रेसर **''दीपज्योतिः परं ज्योतिः''** बोलेगा। इसके पश्चात ही सभी इसे दोहराते हुए पूरा मंत्र बोलेंगे। दीप मंत्र बोलते समय सामान्यतः हमारी आंखें बंद हो जाती हैं। दीप ज्योति बोलते समय अपनी आंखें खोलकर चित्रों व दीपक की ओर एकटक देखना है। जो अधिकारी दीप प्रज्ज्वलन करते हैं, वे दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात एक किनारे खड़े हो जायें ताकि वन्दना में उपस्थित सभी बन्धु/भगिनी को दीप ज्योति का दर्शन हो सके। मंत्र पूर्ण होने के पश्चात पुष्पार्चन करें।
   - दीप प्रज्ज्वलन के लिए एक अन्य दीपक का ही प्रयोग करना चाहिए, **मोमबत्ती का नहीं।**

3. **वन्दना के समय तीन आज्ञाएँ ही दी जाएँ –**

   - प्रारंभ में संस्कृत वन्दना से पूर्व **''मातृ प्रणाम 1–2–3''**
   - हिन्दी प्रार्थना – **'हे हंसवाहिनी'** पूर्ण होने के पश्चात **''ब्रह्मनाद''**
   - शांतिपाठ पूर्ण होने के पश्चात **''मातृ प्रणाम 1–2–3''**

4. **वन्दना के समय मातृ प्रणाम में स्थितियाँ –**

   - वन्दना के समय हाथ जोड़कर वन्दना प्रारंभ करेंगे। सभी प्रतिभागी जब वन्दना बोलना प्रारंभ करेंगे तब प्रणाम की स्थिति में आयेंगे।
   - एक में दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार मुद्रा में लाना।
   - दो में शीश झुकाना।
   - तीन में गर्दन सीधी करना तथा हाथ 'ज्ञान मुद्रा' में लाना।
     (तीनों ही क्रियाओं में आँखें खुली रहेंगी तथा अंक के पश्चात क्रिया होगी। वन्दना गायन हेतु नमस्कार मुद्रा के लिए हाथ 'ज्ञान–मुद्रा' से लाने है।)

5. वन्दना समाप्त होने के पश्चात वाले मातृ प्रणाम में आँखें बन्द रहेंगी।

6. मातृ प्रणाम से मातृ प्रणाम तक की वन्दना के निर्धारित क्रम में अन्य कोई श्लोक/मंत्र/पाठ आदि नहीं जोड़ना है। अपने क्षेत्र/प्रान्त में अन्य कोई श्लोक, दोहे करवाने हैं तो उन्हें निर्धारित क्रम से पूर्व या पश्चात करवाएँ।

7. संस्कृत वन्दना – 'या कुन्देन्दु' से लेकर हिन्दी प्रार्थना 'हे हंसवाहिनी' तक अन्य वाद्य यंत्र भी बजाने हैं परन्तु ब्रह्मनाद से अन्तिम मातृ प्रणाम तक केवल तानपूरा ही बजेगा, अन्य वाद्य यंत्र नहीं।

8. वन्दना में ताल के लिए तबला, ढोलक जैसे भारतीय वाद्ययंत्र ही बजाए जाएं, ड्रम नहीं।

9. वन्दना में पूजा का भाव है अतः वन्दना कक्ष में वातावरण पवित्र रहना चाहिए। इसलिए वहाँ जूते उतार कर ही बैठना चाहिए। वन्दना बैठकर ही करना चाहिए, खड़े होकर नहीं।

10. **भोजन मंत्र ''ॐ ब्रह्मार्पणं'' से प्रारंभ होगा।** भोजन मंत्र के समय हाथ नमस्कार मुद्रा में रहेंगे।

11. शांति मंत्र **''सर्वे भवन्तु सुखिनः''** को शांति मंत्र, विसर्जन मंत्र, कल्याण मंत्र, शांतिपाठ आदि विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है। **इसे ''शांति मंत्र'' ही कहना है।**

12. **वन्देमातरम्** – राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् करने के लिए अग्रेसर दो बार वन्दे मातरम् बोलेंगे। इसके पश्चात् सभी सामूहिक रूप से दो बार वन्दे मातरम् दोहराकर पूर्ण राष्ट्रगीत गायेंगे। अन्त में **'भारत माता की जय' सामूहिक तथा अंतिम पंक्ति की भांति ही बोलेंगे, नारे के समान नहीं।**

*****